आमगाछी : गोलीकांड के विरोध में बड़ी जनसभा

– पुतुल

24 दिसंबर 2008 को स्वशासन जन सभा में देश भर से आये विभिन्न संगठनों के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया और काठीकुण्ड में चल रहे विस्थापन विरोधी आंदोलन को अपना समर्थन देने की घोषणा की।

'हम लोग हैं ऐसे दिवाने, मंजिल को पाकर मानेंगे, दुनिया को बदल कर मानेंगे।' 1974 के संपूर्ण क्रांति के इस गीत को गाते हुये देशभर से आये सामाजिक कार्यकर्ता जनता कर्फ्यू के अंतरगत दलदली ग्रामीण बैरियर से पहले मार्च करते हुए आमगाछी पहुँचे। कमाने वाला खायेगा, लूटनेवाला जाएगा, नया जमाना आयेगा व आवाज दो हम एक हैं जैसे नारे लगाते हुए ये सभी लोग आमगाछी मैदान के समीप शहीद लखीराम टुडू के शहीद स्थल पर पहुँचे और फूल माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। संपूर्ण क्रांति के गीत को गाकर जे.पी. आंदोलन से जुड़े रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने 24 को आंदोलन कर समा बांधने की कोशिश की। तत्पश्चात् आमगाछी मैदान में आयोजित स्वशासन जनसभा में आदिवासी युवतियों ने अतिथियों का स्वागत किया और ग्रामीणों की भीड़ ने लोकसभा न राज्य सभा, सबसे ऊँची ग्राम सभा, कागज तुम्हारा जमीन हमारी, हम सब एक हैं, लड़ेंगे जीतेंगे आदि नारे लगाये।

आयोजित जनसभा को देश के चोटी के तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं ने संबोधित किया। सभी ने एक स्वर से विस्थापन के खिलाफ काठीकुण्ड – शिकारी पाडा के ग्रामीणें के जन आंदोलन को समर्थन देने व किसी भी कीमत पर आमगाछी पोरवरिया में पावर प्लांट नहीं लगाने का एलान किया। वक्ताओं ने 6 दिसंबर को हुई गोलीकांड के लिये सीधे तौर पर मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को जिम्मेदार ठहराया और कड़े शब्दों में घटना की भर्त्सना की। सभा को संबोधित करते हुए आदिवासी जनजातीय आयोग के पूर्व आयुक्त डा. ब्रहमदेव शर्मा ने कहा कि सरदार, नौरशाह व राजनीतिज्ञ ग्रामसभाओं को उनका अधिकार नहीं देना चाहते, इसी का नतीजा है काठीकुण्ड की घटना। सच्चाई यही है कि लोकसभा व राज्यसभा से भी ऊँची है ग्राम सभा। ग्रामीणों के बदौलत ही अन्य सभाओं की रचना होती है। झारखंड सरकार ग्रामसभाओं की अनदेखी कर रही है, यह लोकतंत्र के खिलाफ है। उन्होंने ग्रामीणों से लड़ाई जारी रखने की अपील की। पानी के निजीकरण की लड़ाई लड़ रहे राजेन्द्र सिंह ने कहा कि लोकतंत्र की स्थापना के साठ वर्ष बाद भी अगर स्वशासन के संवैधानिक अधिकारों की बात करने वालों पर पुलिस गोली चलाये तो इससे बड़ी शर्मनाक घटना और नहीं कही जा सकती है। लखीराम टुडू ने विरसा गुंडा की परंपरा को आगे बढ़ाया है, उनकी शहादत का सम्मान करना चाहिए। इस शहादत के बाद भी अगर मुख्यमंत्री को यहाँ के ग्रामीणों से माफी मांगने का साहस नहीं है तो स्पष्ट है कि वे अब ज़मीनी नेता नहीं रहे। सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार सुश्री मणिमाला ने कहा कि यह धरती हमारी माँ है, इसलिए जमीन की न तो कोई कीमत होती है और न ही उसका कोई मुआवजा होता है। शिबू सोरेन की सरकार विकासवादी नहीं, विनाशवादी है। यह आदिवासी गाँव व समाज का विकास नहीं कंपनियों का विकास करना चाहती है। उन्होंने एलान किया कि विस्थापन के खिलाफ पूरे राज्य में लड़ाई जारी रहेगी। इसके लिये हम कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार है।

इसके साथ ही जनसभा में ग्रामीणों ने 'आब बा अतेरे आबुआराज' का संकल्प लिया। ग्राम सभा ने सरकार के लिए एक लोकादेश भी जारी किया जिसमें आमगाछी पोरवरिया में पावर प्लांट को तुरंत वापस लेने की सरकार से मांग की गयी। सभा का संचालन एमेलिया हांसदा व दिलीप हांसदा ने किया। सभा की अध्यक्षता ग्राम प्रधान ने की। सभा में डा. बी.डी.शर्मा (पूर्व आयुक्त आदिवासी जनजातीय आयोग), विजय प्रताप (लोकायन, दिल्ली), राजेन्द्र सिंह (मैग्सेसे अवार्ड, 'राजस्थान'), अरविंद केसरीवाल (मैग्सेसे अवार्ड, दिल्ली), मणिमाला (पत्रकार, दिल्ली), पुतुल (लोकराजनीतिक मंच, उन्नाव यू.पी.), विनोद सिंह (विधायक झारखंड, मा.क.पा. माले राज्य कमेटी सदस्य), विश्व नाथ बागी (प्रदेशअध्यक्ष, समाजवादी पार्टी), कारू (बोधगया), कुमार चन्द माडी, अनिया बाहा (रांची), बासवी (रांची), बंकू यादव, एमिलिया हांसदा, सुनीता (राष्ट्रीय सचिव, मा.क.पा. मार्च), दिलीप हांसदा, इरफान (इंसाफ), राकेश रफीक (मुरादाबाद) आदि उपस्थित थे।

इस जन सभा के अंत में निम्न संकल्प लिये गये–

- अपने गांव तथा इलाके का विकास हम सब अपनी बुद्धि–विवेक, कौशल, श्रम, प्राकृतिक धरोहर तथा संस्कृति की बुनियाद पर करेंगे।
- अपने गांव की समस्याओं और चुनौतियों को पूरा गांव–समाज (महिला–पुरूष) मिलकर दूर करेंगे।
- गांव का कोई भी व्यक्ति पारंपरिक एवं आधुनिक काम पद्धति से वंचित न रहे, इसके लिए गांव–गांव में जीवनशाला चलायेंगे।
- अपने गांव 'आतु बैसी' का निर्माण करेंगे और हर गांव का टमाक (नगाड़ा), मांदर को मरम्मत करा कर रखेंगे। प्रत्येक सप्ताह टकाम की आवाज के साथ बैसी में बैठक होगी। बैठक के बाद नाच–गाना होगा।
- हर वर्ष 6 दिसंबर को शहीद मेला – जहां गोली चली है – वहां लगेगा।
- शहीद लखीराम टुडू जीवनशाला' शुरू करेंगे, जिसमें जीवन और जीविका की पढ़ाई होगी तथा जीवन और जीविका की रक्षा के लिए शांतिमय लड़ाई का प्रशिक्षण होगा।
- स्वावलंबी और स्वशासी भारत की पुर्नरचना के लिए अन्य पहल और प्रयास में हम सब अपना योगदान देंगे।

- भारत की संप्रभुता, गणतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के लिए देशज समाजवादी चेतना पर आधरित व्यापक और गंभीर पहल को आकार देंगे।
- आजीविका, आजादी और आनंद की रक्षा के लिए चल रहे ''विश्व प्रयास'' का हम सब हिस्सा हैं। इस प्रयास को हम सब व्यापक एकजुटता में परिवर्तित करने के लिए प्रयासरत रहेंगे।
- झारखंड में 'कम्पनी–प्रेमी' जनविरोधी सरकार को उखाड़ फेकेंगे और उसकी जगह जन–प्रेमी स्वशासी सरकार की स्थापना करेंगे।

<u>धरना</u>

केन्द्रीय समिति, हूल झारखंड, क्रांति दल द्वारा आयोजित धरना 16 नवंबर 2008 को राज्यपाल राँची के समक्ष सम्पन्न हुआ। धरने का प्रमुख मुद्दे थे, बढ़ती हुई मँहगाई पर रोक लगाओ, सारे एम.ओ.यू. को रद्द किया जाए, कारपोरेट जगत कृषि और खुदरा व्यापार से दूर हटे आदि।

धरने में आये लोगों का मानना था कि सरकार ने झारखंड के विकास हेतु देशी विदेशी कंपनियें के साथ सत्तर से अधिक समझौते किए हैं। इन सभी समझौतों को पूरा होने के लिए दो लाख एकड़ से अधिक जमीन जरूरी है। उनका अपना अनुभव है कि बांध, खदान और कारखानों से लोग उजड़े हैं। पुर्नवास और रोजगार तो दूर वास्तविक मुआवजा भी उन्हें नहीं मिला है। अतः उनका मानना है कि विकास के तहत जिन समझौतों के द्वारा कारखानों से यहाँ विकास होगा इसका झारखंड़ियों को रत्ती भर विश्वास नहीं है। क्योंकि विकास की इस नीति के चलते झारखंडी विलुप्त हुए है और शहरों की संख्या बढ़ गयी है। इस विकास ने पहचान और अस्तित्व के संकट को भयावह बना दिया है।

गौरतलब है कि इसके पूर्व संगठन की केन्द्रीय समिति ने झारखंड के हर जिला मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन के माध्यम से मँहगाई रोकने, पूंजीपतियों के साथ हुए समझौते को रद्द करने और परमाणु करार के विरोध में कार्यक्रम आयोजित किया। इस धरने में, का. विरसा हेम्बाय, का. जसबा कच्छप, गंगा सिंह, राजदेव राजू, का. मंजुल आलिवर दादेल, बाबूधन मुर्मू आदि तथा विभिन्न संगठनों के लोग शामिल थे।